सोने का
संदूक
सारिका शर्मा

सोने का संदूक

दुकानदार बोला—"भाई साहब, आप बुरा न मानें। मैं यों ही हँस पड़ा था। बात यह है कि मैंने भी चार-पाँच दिन पहले ऐसा ही सपना देखा था। सपने में एक महात्मा जी कह रहे थे कि यहाँ से दक्षिण दिशा में सौ मील चलने पर एक गाँव है—नारायणपुर। उसमें एक बरगद का पेड है। उसी पेड़ के पास एक मकान है। उस मकान में आँगन है। आँगन में खजाना गड़ा है—ढेर सारा सोना और चाँदी।" एक क्षण रुकने के बाद दुकानदार ने कहा—"अब आप ही बताइए, क्या यह हँसने की बात नहीं है ? क्या मुझे उस खजाने की तलाश में जाना चाहिए ?"

भजनसिंह कुछ देर सोचता रहा। उसे लगा, उसे वही शुभ संदेश सुनने को मिल गया है, जिसके लिए वह आया था। उसने दुकानदार से इतना ही कहा—"अच्छा महाशय, आप सच कहते हैं। सपने तो सपने ही होते हैं। उनसे हमें भटकना नहीं चाहिए। फिर भी वे कभी-कभी सच हो जाते हैं। अच्छा, अब मैं चलता हूँ। अलविदा।"

[इसी संग्रह की कहानी 'शुभ संदेश' से]

ISBN—81-88121-04-5

मूल्य : रु० 60.00

सोने का संदूक

(बाल-कहानियाँ)

राजा राम मोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान,
कलकत्ता के सौजन्य से

हिंदी अकादमी दिल्ली के प्रकाशन सौजन्य से

परमेश्वरी प्रकाशन
बी-109. प्रीत विहार. दिल्ली-110092

ने का संदूक

सारिका शर्मा

ISBN—81-88121-04-5

प्रकाशक
परमेश्वरी प्रकाशन
बी-109, प्रीत विहार
दिल्ली-110092

प्रथम संस्करण
2001

कला-पक्ष
प्रेम कुसुम आर्ट

मूल्य
साठ रुपये

मुद्रक
एस० एन० प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

SONE KA SANDOOK (Children's Stories in Hind
by Sarika Sharma
Price : Rs. 60.00

मुस्काते फूलों के लिए
जो जीवन को सुगंधमय बनाते हैं

क्रम

चालाक खच्चर

एक गाँव में एक किसान रहता था । उसके पास बहुत-सी भेड़ें थीं । उसके पास कई खेत भी थे । उसने एक बैल और एक खच्चर रखे हुए थे । उन दोनों को उसने एक ही थान मे बाँधा हुआ था ।

हर रोज सारा काम खत्म होने के बाद जब बैल थका-हारा थान में लौटता, तब पाता कि खच्चर आराम से पड़ा हुआ है । किसान उसके लिए खाने को घास डालता, वह मजे से खाता और पानी पीता । जब किसान को शहर से कुछ लाना होता या अपनी फसल बेचने के लिए शहर जाता, तभी वह खच्चर को काम में लाता । ऐसा महीने में दो या तीन बार ही हो पाता था ।

बैल मन ही मन खच्चर के भाग्य को सराहता । वह सोचता— काश, मेरे नसीब में भी आराम लिखा होता ।' एक दिन बैल खेत से बहुत थककर आया । उसने देखा, खच्चर आराम से घास खा रहा है । यह देखकर वह और उदास हो गया । आज उसकी उदासी खच्चर से भी छिपी न रह सकी ।

खच्चर ने पूछा—"क्या बात है बैल भाई, आज तुम बहुत उदास नजर आ रहे हो ?"

पहले तो बैल ने टालमटोल किया, पर जब खच्चर अड़ ही गया तो वह अपने आप को रोक न सका । बैल ने अपने
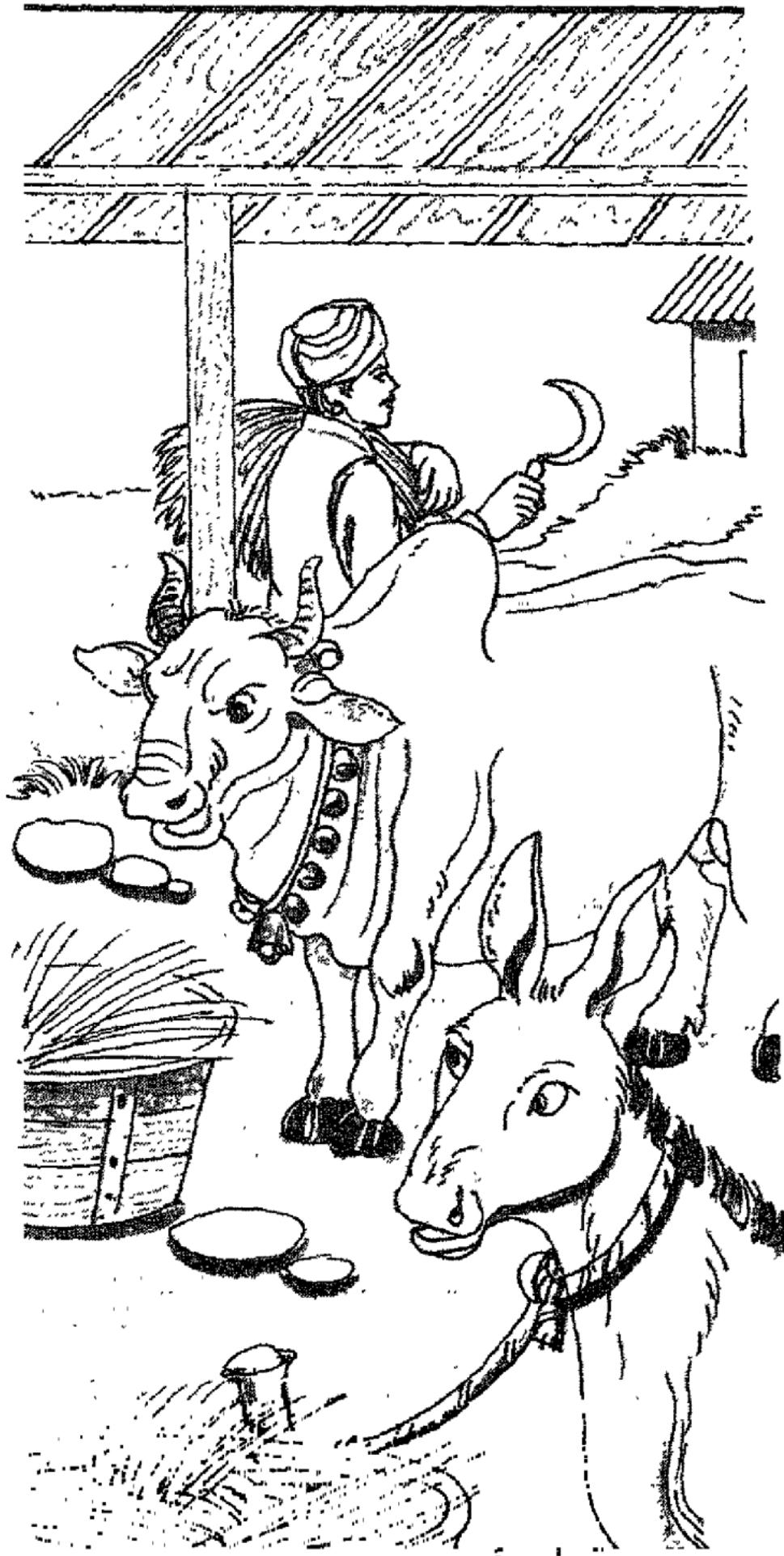
दिल का हाल कह सुनाया ।

"खच्चर भाई, तुम कितने भाग्यशाली हो । तुम यहाँ आराम से सभी सुविधाओं के साथ रहते हो । बढ़िया घास और चना खाते हो । कोई काम-धाम नहीं । बस, कभी-कभी शहर चले जाते हो सैर-सपाटे के लिए । मेरा जीवन तो सिर्फ कडी मेहनत के लिए बना है । मुझे लगता है, हल चलाते-चलाते और पाट पर काम करते-करते मेरी सारी जिदगी बीत जाएगी ।"

खच्चर ने बैल के दिल का हाल सुना तो उसे धीरज बँधाया—"घबराओ मत भाई । तुम्हारी समस्या का कुछ न कुछ हल तो निकल ही आएगा ।" ऐसा कहकर खच्चर कुछ सोचने लगा । अचानक वह बोला—"देखो, एक तरकीब मुझे सूझी है । बस, एक शर्त है । जैसा मैं कहूँगा तुम वैसा ही करोगे ।"

बैल ने सिर हिलाकर हामी भरी ।

खच्चर ने कहना शुरू किया—"कल किसान तुम्हें खेत में ले जाएगा । जैसे ही वह तुम्हारी गर्दन पर जुआ रखे, तुम बीमार होने का नाटक करना और पेट के बल गिर जाना । फिर किसान चाहे कितनी ही कोशिश क्यों न करे, तुम मत उठना, चाहे वह तुम्हें मारे-पीटे भी । अगर किसी तरह तुम्हें वह खड़ा कर दे तो तुम दुबारा गिर जाना । खेत से वापस थान में लाने के बाद जब वह तुम्हारे आगे चारा डाले तो तुम बिलकुल मत खाना । एक-दो दिन तक ऐसा ही करना । फिर देखना, तुम्हें भी इस उबाऊ काम से छुटकारा मिल जाएगा ।"

बैल ने खच्चर की सब बातें ध्यान से सुनीं और उन पर
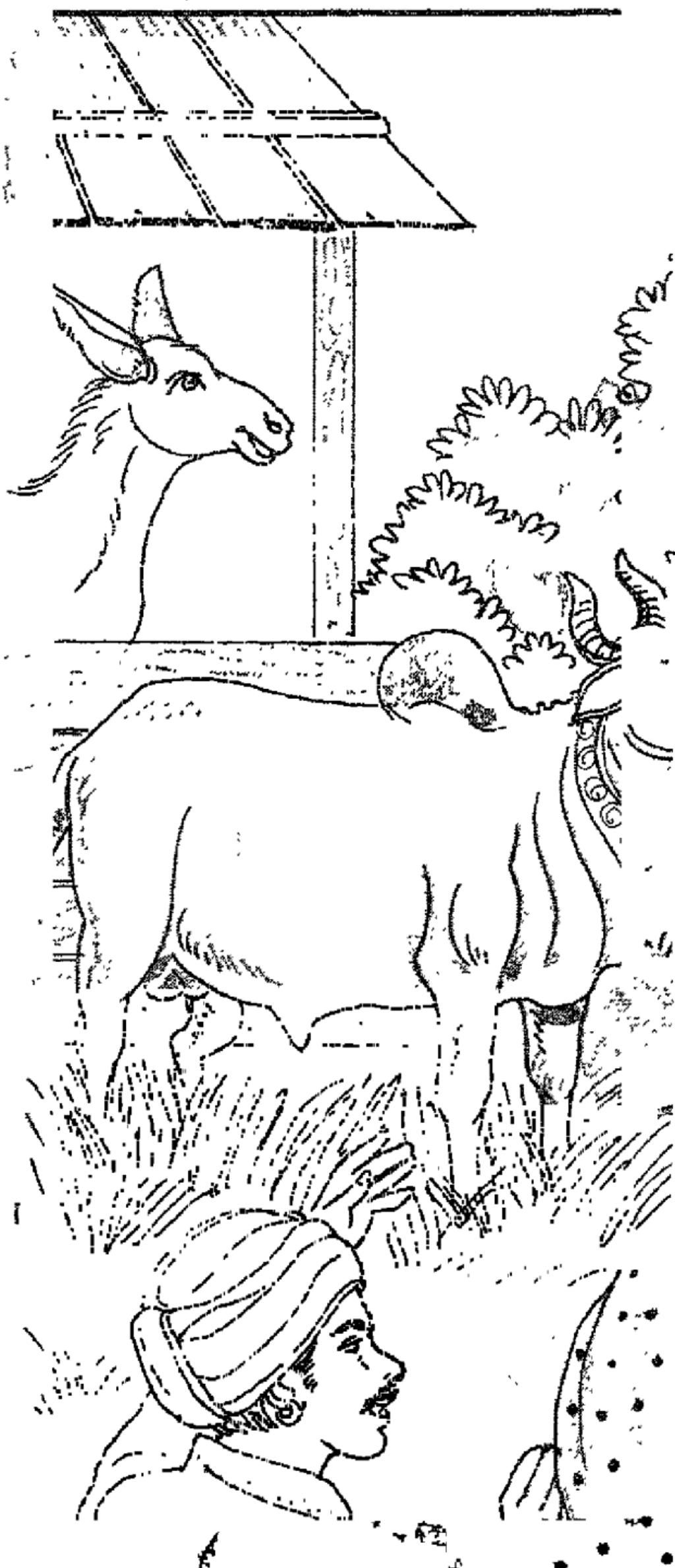
अमल करने का मन ही मन फैसला कर लिया ।

अगले दिन किसान ने बैल के सामने चारा डाला । उसने कुछ नहीं खाया । खेत में जाते ही बैल ने नाटक करना शुरू कर दिया । वह गिर गया और फिर न उठा । किसान ने सोचा, बैल बीमार हो गया है । वह बैल को वापस थान में लाया और उसकी जगह खच्चर को ले गया । किसान ने सारा दिन खच्चर से काम लिया ।

शाम होने पर खच्चर वापस थान में आया । वह थककर चूर हो रहा था । उसे तो काम करने की आदत ही नहीं थी और यह काम तो कड़ी मेहनत का था । बैल ने उसे नेक सलाह के लिए धन्यवाद दिया । खच्चर ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया । वह मन ही मन अपनी बेवकूफी पर पछताता रहा ।

अगले दिन किसान फिर खच्चर को खेत में ले गया । फिर उन्हीं कामों का सिलसिला चला । शाम को फिर खच्चर बुरी तरह थका-माँदा थान में लौटा । वह बहुत उदास था । मन ही मन सोच रहा था, 'काश ! मैंने अपनी तरकीब अपने तक ही रखी होती ।'

खच्चर की दुर्दशा देखकर बैल ने दुबारा आभार प्रकट किया और उसकी दूरदर्शिता को सराहा । बैल ने देखा, खच्चर आज बहुत उदास है । उसने खच्चर की उदासी का कारण पूछना अपना फर्ज समझा । बहुत पूछने पर भी खच्चर ने कुछ जवाब न दिया । वह मन ही मन कुढ़ता रहा और इस मुसीबत से छुटकारा पाने की तरकीब सोचता रहा ।

अचानक खच्चर को एक तरकीब सूझी । उसने बैल से कहा—"बैल भाई, यह दुनिया सिर्फ अपने मतलब की है

कोई किसी का सगा नहीं है । जब तक किसी का काम करते रहो तो वह खुश रहता है । अगर न करें तो दूध से मक्खी की तरह निकालकर फेंक देते हैं ।"

बैल ने पूछा—"क्यों, क्या बात हो गई ? आखिर मुझे भी कुछ बताओ ?"

खच्चर ने कहा—"आज जब मैं काम से लौट रहा था तो किसान अपनी पत्नी से कह रहा था—अगर यह बैल एक-दो दिन में ठीक नहीं होगा तो इसे कसाईखाने ले जाऊँगा । बेचने पर कुछ पैसे ही मिलेंगे । फिर हम नया बैल ले आएँगे ।"

यह सुनते ही बैल के होश फाख्ता हो गए । घबराते हुए उसने पूछा—"खच्चर भाई, अब मैं क्या करूँ ?"

खच्चर ने कुछ सोचते हुए जवाब दिया—"करना क्या है, कल से तुम फिर अपना काम शुरू कर दो । शायद किसान तुमसे खुश हो जाए और तुम्हें बेचने की बात सोचना छोड़ दे ।'

बैल ने जवाब दिया—"तुम ठीक कहते हो, कल से मै अपना काम अच्छी तरह मन लगाकर करूँगा ।" कहकर उसने सारा चारा खा लिया और मन लगाकर काम करने की ठान ली । वह रात-भर सो न सका । उसे बुरे-बुरे खयाल आते रहे ।

अगली सुबह किसान अपनी पत्नी के साथ आया तो देखा, बैल ने सारा चारा खा लिया है । वह खुश हुआ । समझ गया, बैल स्वस्थ हो गया है । जैसे ही किसान ने खेत मे ले जाने के लिए बैल को खोला तो बैल ने तरह-तरह से किलोलें करके अपने मालिक को खुश कर दिया । किसान और उसकी पत्नी हँसते हुए बैल को खेत की तरफ ले गए ।

बैल ने मुड़कर देखा खच्चर मंद मंद मुस्करा रहा था

गोबर गणेश का गधा

शाम का समय था । दो ठग आपस में चुहलबाजियाँ करते हुए एक वीरान सड़क पर चले जा रहे थे । उनकी नजर एक आदमी पर पडी जो अपने साथ एक गधा लिए जा रहा था । उसे देखकर एक ठग ने कहा—"देख यार, कैसा गोबर गणेश-सा आदमी है यह । इसे तो बहुत आसानी से मूर्ख बनाया जा सकता है ।"

दूसरे ठग ने पूछा—"कैसे ?"

"मैं इसके सामने ही इसके गधे को उड़ा दूँगा ।"

दूसरे ठग ने पूछा—"कैसे ?"

पहले ठग ने उसे सारी योजना समझाई । उसके बाद पहला ठग गोबर गणेश के पीछे-पीछे चल दिया । मौका देखते ही उसने चतुराई से गधे की रस्सी ढीली कर दी । फिर उस रस्सी को अपनी गरदन में डाल लिया । अब वह फिर गोबर गणेश के पीछे-पीछे चलने लगा ।

दूसरा ठग गधे को एक खास जगह ले गया । तब अचानक पहला ठग रुक गया । दुबारा झटका देने पर भी जब वह नहीं हिला तो गोबर गणेश ने पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि उसका गधा गायब है । उसके पैरों तले से जमीन ही खिसक गई । उसने घबराते हुए पूछा—"तुम कौन हो भाई ' यहाँ कैसे आ गए ? मेरा गधा कहाँ गया ?"

ठग ने जवाब दिया—"मै ही आपका गधा हूँ हुजूर !"

गोबर गणेश ने हैरान होते हुए पूछा—"ऐसा कैसे हो सकता है ? तुम तो इंसान हो ! गधे कैसे हो सकते हो ?"

ठग ने कहा—"मालिक, मैं सच कह रहा हूँ । मैं ही आपका गधा हूँ । एक ब्राह्मण के शाप की वजह से मैं गधे की योनि में आ गया था ।" अपनी बात पर विश्वास दिलाने के लिए उसने कहा—"इसके पीछे एक अजीब-सा किस्सा है । मैं अपने गाँव में सीधा-सादा जीवन बिता रहा था । उन दिनों मैं बेरोजगार था । मेरी माँ ने मुझे सलाह दी कि मै मंदिर जाऊँ और भगवान् से नौकरी की प्रार्थना करूँ । मै मंदिर के भीतर गया । देखा, भगवान् की मूर्ति के सामने ढेर सारे पकवान रखे हैं । मैं भूखा तो था ही, उन पकवानों की भीनी-भीनी सुगंध से मेरी भूख और जोर पकड़ गई । अब मुझसे रहा नहीं गया । सोचा, आसपास तो कोई भी नहीं है, क्यों न थोड़ा-सा खाकर भूख मिटा लूँ ।

"हे मालिक, मैंने खाना शुरू ही किया था कि मंदिर का पंडित आ गया । मुझे भगवान् के सामने रखा हुआ भोजन खाते देखकर वह आगबबूला हो गया । वह मुझे शाप देते हुए बोला—'तूने भगवान् का भोजन जूठा करके बहुत बड़ा पाप किया है । जा, आज से तू गधा बन जाएगा ।'

"यह सुनते ही मैं डर गया । मैंने उस पंडित की बहुत खुशामद की । काफी देर बाद जब वह थोड़ा पिघला, तो बोला—'यह ब्राह्मण का वचन है, कभी झूठा नहीं होगा; पर यदि तू पाँच वर्ष कड़ी मेहनत करे और भगवान् को याद करता रहे तो फिर से मनुष्य बन जाएगा ।' "

ठग ने कुछ रुककर आगे कहा—"और मैं गधा बन गया । तब से मालिक, मैं आपकी सेवा कर रहा हूँ । आज मेरे शाप की अवधि समाप्त हो गई है ।" इतना कहकर ठग चुप हो गया ।

गोबर गणेश यह सुनकर और घबरा गया । उसने कहा—"भगवान् की माया अपरंपार है । उसके आगे किसी का वश नहीं है। मैंने इतने दिन तुमसे नौकरी करवाई और इस दौरान जो यातनाएँ दीं, उन सबके लिए मैं तुमसे माफी चाहता हूँ ।" यह कहकर उसने ठग को छोड़ दिया ।

गोबर गणेश घर पहुँचा तो वह पसीने-पसीने हो रहा था और बेहद परेशान था । उसकी यह दशा देखकर उसकी पत्नी बहुत हैरान हुई । उसने पूछा—"क्या बात है, तुम इतने परेशान क्यों हो ? तुम्हारा गधा कहाँ है ?"

गोबर गणेश ने सारी कहानी कह सुनाई । यह सब सुनकर उसकी पत्नी के भी होश उड़ गए । वह रोते-रोते कहने लगी—"हमने उस बेचारे से इतना क्रूर व्यवहार क्यो किया ! इसके लिए भगवान् हमको कभी भी माफ नही करेगा !" यह कहकर वह भगवान् की मूर्ति के सामने गिर पड़ी और माफी के लिए गिड़गिड़ाने लगी ।

कई दिन तक गोबर गणेश घर में बेकार पड़ा रहा । उसका सारा कामधंधा गधे के सहारे ही चलता था । कुछ दिन बाद घर में खाने तक के लाले पड़ने लगे । उसकी पत्नी ने उसे झिड़कते हुए कहा—"इस तरह हाथ पर हाथ रखे बैठे रहने से कैसे चलेगा ? घर में खाने को अब कुछ भी नहीं बचा है ।"

गोबर गणेश ने कहा—"फिर मैं क्या करूँ ? मेरी रोजी-रोटी तो गधे से ही चलती थी । वो अब रहा नहीं ।"

पत्नी ने सलाह दी—"क्यों न तुम नया गधा खरीद लाओ, जिससे दुबारा काम शुरू किया जा सके । नहीं तो हम लोगों के भूखे मरने की नौबत आ जाएगी ।" यह कहकर उसने अपना एक अकेला सोने का गहना निकाला और गोबर गणेश के हाथ पर रख दिया ।

गोबर गणेश ने अपनी पत्नी से गहना लिया और बाजार में जाकर बेच दिया । फिर रुपए लेकर उस जगह पहुँचा जहाँ जानवर बिकते थे । अचानक उसकी नजर एक गधे पर पड़ी । वह हू-ब-हू उसके गधे जैसा था । गोबर गणेश ने और अच्छी तरह उस गधे की जाँच-पड़ताल की । उसका शक पक्का हो गया ।

वह गधे के पास गया और उसके कान में फुसफुसाया—"क्यों, क्या फिर किसी मंदिर में जाकर भगवान् के भोग को जूठा कर आया है ? इस बार तो बच्चू, सस्ता ही छूट गया है, जो पंडित ने तुझे फिर से गधा ही बनाया है । नहीं तो सूअर बना सकता था । अब मेरा-तेरा कोई वास्ता नहीं । सूअर कहीं का !"

वह उधर से मुड़ा । दूसरा गधा खरीदा और अपना कामधंधा शुरू कर दिया ।

राजकुमारी की बीमारी

रायगढ़ में राजा कृष्णदेव शासन किया करते थे । उनकी एक बेटी थी—मालती । राजकुमारी बहुत सुंदर और सुशील थी । हमेशा प्रसन्न रहने वाली राजकुमारी धीरे-धीरे बड़ी हो रही थी । राजा उसको शिक्षा के साथ-साथ युद्ध का प्रशिक्षण भी दिला रहे थे ।

अचानक महल पर बिजली-सी गिरी । हरदम हँसने वाली राजकुमारी गुमसुम रहने लगी । धीरे-धीरे वह कमजोर होने लगी । राजा ने देश-विदेश के सभी जाने-माने वैद्य-हकीमों का इलाज करा लिया, पर राजकुमारी ठीक नहीं हो पा रही थी । कोई उसकी बीमारी नहीं पहचान पाया । इस तरह दिन पर दिन वह अज्ञात बीमारी राजकुमारी के चारों ओर अपना शिकंजा कसने लगी ।

राजा देश-विदेश के मंदिरों में गया । भगवान् से मन्नत माँगी । सब कुछ व्यर्थ रहा । राजकुमारी अंदर ही अंदर घुलती रही ।

एक दिन राजा के दरबार में एक कथा बाँचने वाला आया । उसने कहा—"महाराज, मैं राजकुमारी का इलाज करने आया हूँ । मुझे दीपक कथा बाँचने वाला कहते हैं ।"

उसकी बात सुनकर सभी दरबारी मन ही मन हँसने लगे राजा भी हैरान था यह मामूली सा आदमी मेरी बेटी

को कैसे ठीक करेगा ? उम्मीद के लगभग सभी दरवाजे बंद हो चुके थे । राजा ने सोचा, क्यों न इसे भी आजमा लिया जाए ।

राजा बोला—"ठीक है, दीपक कथावाचक जी, तुम राजकुमारी का इलाज शुरू कर दो । पर एक बात याद रखना, अगर वह ठीक नहीं हुई तो तुम्हें सूली पर चढ़ा दिया जाएगा ।"

दीपक बोला—"मुझे मंजूर है ।"

दीपक को राजकुमारी के पास ले जाया गया । उसने देखा, एक विशालकाय खूबसूरत पलंग पर राजकुमारी लेटी है । उसका चेहरा बिलकुल पीला पड़ गया है ।

दीपक ने राजकुमारी की किसी प्रकार की जाँच-पड़ताल नहीं की । न ही उसे कोई दवा दी । उसने राजकुमारी के सामने कहानियाँ कहना शुरू कर दिया ।

दूर जंगलों की कहानियाँ, ऊँचे पहाड़ों की, झरनों-झीलो आदि की कहानियाँ सुनाईं । इनमें नायक-नायिका थे, युद्धो के वर्णन थे, प्रेम और त्याग की घटनाएँ थीं । ऐसा करते हुए दीपक लगातार राजकुमारी के हाथ की नब्ज पर अपनी उँगली रखे रहा ।

सात दिन तक दीपक ने यही कुछ किया । उसके बाद वह राजा के पास आया और बोला—"महाराज, मैंने राजकुमारी की बीमारी को जान लिया है । वह किसी से प्रेम करती है । वह युवक आकर्षक और बहुत बहादुर है ।"

दीपक ने राजा को आगे बताया—"महाराज, कुछ दिन पहले राजकुमारी जंगल में शिकार खेलने गई थी । हिरन का पीछा करते हुए अकेली बहुत दूर निकल गई

थी और घने जंगल में पहुँच गई थी। वहाँ एक खूँखार शेर ने उस पर आक्रमण कर दिया था । तभी एक युवक ने उस शेर को मार गिराया था और राजकुमारी की जान बचा ली थी । तभी से राजकुमारी उस युवक से प्रेम करने लगी है । मैंने जब राजकुमारी को एक कहानी सुनाई तो वह रोने लगी । पूछने पर वह बोली—'बिलकुल इसी से मिलती-जुलती कहानी मेरी है ।' फिर उसने अपनी यह कहानी कह सुनाई ।"

राजा दीपक के इलाज करने के तरीके पर हैरान भी हुआ और खुश भी । उसने तुरंत अपने सैनिकों को भेजकर उस युवक को पकड़कर ले आने के लिए कहा । कुछ समय बाद सैनिक उस युवक को पकड़कर ले आए । विस्तार से जानने पर मालूम हुआ कि उस युवक का नाम सुजानसिंह है और पेशे से वह डाकू है । राजा को यह सब जानकर बहुत दु:ख हुआ और गुस्सा भी आया । पर राजकुमारी की बीमारी की बात सोचकर राजा ने सुजानसिंह को महलों में रख लिया ।

सुजानसिंह के राजमहल में आते ही राजकुमारी ठीक होने लगी । राजा ने सुजानसिंह और दीपक को अपना मत्री बना लिया । सुजानसिंह के साथ राजकुमारी की शादी पक्की कर दी गई । अब वह राजमहल में ही रहता था ।

राजमहल में इतने ऐशो-आराम के साथ रहने से सुजानसिह का दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ गया । उसने सपने मे भी नहीं सोचा था कि उसे इतनी सुंदर पत्नी और राजमहल मे रहने को मिलेगा । महल की शानोशौकत से वह चका-चौंध हो रहा था

सुजानसिंह का व्यवहार अब बिलकुल बदल गया था वह अपनी मनमानी करने लगा । हर वक्त शराब के नशे मे चूर रहने लगा । वह सभी नौकरों को अपनी जी-हुजूरी मे लगाए रखता । जरा-सी भी गलती करने पर उन्हें कोड़ो से पीटने का आदेश दे देता ।

राजा के कानों में भी यह बात पड़ी । वह बहुत परेशान रहने लगा । अपनी गलती पर वह पछताने लगा । उसे यह अनुमान तो पहले ही था कि यह युवक राजकुमारी के योग्य नहीं है, किंतु यह इतनी बड़ी परेशानी बन जाएगा, इसका उसे आभास न था । राजा सोचने लगा, अब उसे महल से भी नहीं निकाला जा सकता, क्योंकि उसके जाने से राजकुमारी फिर बीमार पड़ सकती है ।

राजा ने इस मामले को सुलझाने के लिए दीपक को बुलाया । उसके सामने समस्या रखी गई । दीपक ने कहा—"घबराएँ नहीं महाराज, यह समस्या जल्दी ही हल हो जाएगी । मुझे कुछ दिन का समय चाहिए ।"

राजा ने उसे छुट्टी दे दी । साथ ही फिर उससे इस समस्या के यथाशीघ्र सुलझाने का आग्रह किया ।

दीपक तुरंत राजमहल से निकलकर अपने गाँव की ओर चल दिया । गाँव में वह अपने हकीम काका के पास गया । काका अपने समय में प्रसिद्ध हकीम रह चुके थे । देश-विदेश से राजा-महाराजा और साधारण लोग उनके पास इलाज के लिए आते थे । अब बुढ़ापे की जर्जर अवस्था में उन्होंने अपने इस हुनर को लगभग त्याग दिया था । अब तो वह जिंदगी के दिन गिन रहे थे ।

हकीम काका के पास जाकर दीपक ने सारा किस्सा कह सुनाया । काका ने तुरंत अपने पुराने खजाने में से एक जरजर' नाम की बूटी निकाली । दीपक को देते हुए उन्होंने उसे प्रयोग करने का तरीका भी बता दिया ।

बूटी लेकर दीपक वापस महल में आ गया । अगले दिन उसने बूटी को पीसकर चूरन बना लिया और फिर उस चूरन को सुजानसिंह की शराब में मिला दिया ।

शराब पीने के बाद सुजानसिंह में अजीब-से परिवर्तन होने लगे । उसके बाल दिन-प्रतिदिन सफेद होने लगे । चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ने लगीं । धीरे-धीरे उसकी कमर झुकने लगी । राजकुमारी सुजानसिंह की हरकतों से पहले ही परेशान रहती थी । उसके इस रूप को देखकर वह मन ही मन उससे घृणा करने लगी ।

अपने दिल की बात राजकुमारी किसी से कह भी नहीं सकती थी, क्योंकि सुजानसिंह उसी की पसंद का युवक था । वह फिर गुमसुम रहने लगी । फिर से राजकुमारी पहले वाली बीमारी की चपेट में आ गई ।

राजा और दीपक दोनों इस बार उसकी बीमारी की वजह जानते थे ।

राजा ने तुरंत सुजानसिंह को महल से निकाल दिया । उसे देश छोड़कर चले जाने का आदेश दे दिया गया । उसके जाते ही राजकुमारी सामान्य होने लगी । राजा ने राजकुमारी के सुखद भविष्य के लिए उसका विवाह दीपक के साथ कर दिया ।

अब दीपक और खुशी खुशी रहने लगे

शुभ संदेश

एक समय की बात है । एक लकड़हारा था । उसका नाम था, भजनसिंह । उसका काम था, जंगल में जाकर लकड़ी काटना और बाजार में जाकर बेच आना । उसी से उसके घर का गुजारा चलता था । वह बाकी समय अपने घर में बिताता था । उसकी पत्नी का नाम सुखिया और बेटे का नाम धरम था ।

भजनसिंह मेहनती आदमी था । उसके परिवार का गुजारा मुश्किल से ही चल रहा था । फिर भी वे लोग दुखी नहीं थे । जिन दिनों बारिश होती थी, उन दिनों बहुत मुश्किल पड़ती थी । उन दिनों लकड़ी नहीं कट सकती थी । अगर जंगल से काट भी लाए तो गीली लकड़ी को खरीदे कौन ? तब वह धूप निकलने का इंतजार करता था । सुखिया लकड़ियों को सुखाने में मदद करती थी । वह सूखी लकड़ियों को बारिश में भीगने से बचाती थी । उन दिनों एकाध बार बिना भोजन भी रहना पड़ जाता था ।

भजनसिंह ईमानदार आदमी था । वह धनी बनना भी नहीं चाहता था । फिर भी उसकी पत्नी और बच्चा भूखे मरें, यह उसे बहुत अखरता था । उसने कई तरकीबें निकालीं, ज्यादा मेहनत भी की, कोई फायदा नहीं हुआ । वह चाहता था खेती करे पर उसके पास जमीन नहीं थी वह व्यापार

करना चाहता था, पर रुपया कहाँ से लाए ?

एक दिन की बात है । सुखिया अपनी माँ से मिलने गई हुई थी । भजनसिंह घर में अकेला था । दिन का समय जंगल में और फिर बाजार में बीत गया । शाम को घर आया । खाना बनाकर खा लिया और फिर आराम करने लगा और खाट पर पड़े-पड़े सो गया । तभी उसने एक सपना देखा ।

वह अपने घर के आँगन में टूटी चारपाई पर बैठा है । उसके चेहरे पर उदासी है । उसका मुँह नीचे की ओर झुका हुआ है । तभी उसने महसूस किया कि उसके कंधे पर एक हाथ रखा है । इससे उसे कुछ प्यार महसूस हुआ, कुछ बल मिला । उसने सिर उठाकर देखा, एक महात्मा खड़े हैं ।

महात्मा ने कहा—"बेटा, उदास क्यों होते हो ? बुरे दिन हमेशा नहीं रहते । जीवन में धूप-छाँव का खेल चलता ही रहता है । तुम गरीबी से तंग आ गए हो न ! देखो, यहाँ से उत्तर दिशा में चले जाओ । सौ मील की दूरी पर एक नदी है । उसका नाम है—श्यामा । वह श्यामनगर के पास बहती है । उसी नदी पर एक पुल है । तुम उस पुल के पास चले जाओ । पुल पार मत करना । वहाँ तुम्हें एक शुभ संदेश सुनने को मिलेगा ।"

यह कहकर महात्मा जी चले गए । उन्होंने भजनसिंह को कुछ कहने का मौका ही नहीं दिया । इसी बीच सपना टूट गया । भजनसिंह बार-बार सपने के बारे में सोचने लगा । कभी सपने को इस सिरे से उठाता, कभी दूसरे सिरे से पर बात समझ में नहीं आ रही थी

क्या यह सपना सच हो सकता है ? उसने तय किया कि वह उस जगह पर जरूर जाएगा । उसे यह उत्सुकता थी कि उसे कौन-सा शुभ संदेश सुनने को मिलेगा ? अगर उसने सपने में यह देखा होता कि उस जगह पर धन गड़ा है तो वह कभी नही जाता, मगर शुभ संदेश सुनने के लिए तो जाना ही पड़ेगा । उसे यह सोचकर भी तसल्ली हुई कि सुखिया पंद्रह-बीस दिन से पहले नहीं लौटेगी ।

इसी उधेड़बुन में उसकी रात बीत गई, पर अभी दिन नहीं निकला था । वह झुटपुटे में ही घर का ताला बंद करके चुपचाप निकल लिया । वह उत्तर दिशा की ओर चल पडा, पैदल-पैदल । उसकी जेब में आठ दिन तक गुजारे के लिए कुछ रुपए थे ।

वह सुबह से शाम तक यात्रा करता और अँधेरा होने पर किसी जगह ठहर जाता । किसी गाँव में किसी के घर या जगल की किसी झोंपड़ी में रात बिता देता । लोगों से बातचीत करके अपना दिल बहला लेता । थोड़ा-बहुत चना-चबैना खा लेता । कहीं न कहीं रोटी-पानी का इंतजाम भी हो ही जाता था ।

वह पाँच दिन में उसी पुल के पास पहुँच गया । अगले दिन पुल के पास जाकर खड़ा हो गया । सारा दिन वही बीत गया । पुल पुराना था । उस पर ज्यादा लोग आते-जाते नही थे । पुल के पास ही एक दुकान थी । दुकानदार उसे कई दिन से ऐसे ही आते हुए देख रहा था । उसे उत्सुकता भी होती । कई दिन इसी तरह बीत गए । भजनसिंह को कोई शुभ संदेश नहीं मिला

एक दिन दुकानदार से नहीं रहा गया । उसने पूछ ही लिया—"क्यों भाई साहब, आप रोज पुल के इस पार खड़े रहते हो । न कहीं आते हो, न कहीं जाते हो । किसी का इंतजार कर रहे हो क्या ?"

भजनसिंह ने पहले तो टालमटोल करने की कोशिश की, परंतु दुकानदार ने काफी अनुरोध किया । उसे लगा, उसके दिल में कुछ है, जिसे वह बताना नहीं चाहता ।

इधर भजनसिंह को भी लगा कि जो उसके दिल में है, उसे किसी से कह देना चाहिए । तब भजनसिंह ने सारा किस्सा कह सुनाया ।

भजनसिंह की सारी बात सुनकर दुकानदार हँस पड़ा । कुछ देर तक हँसता ही रहा । भजनसिंह कुछ परेशान हो गया । उसने पूछा—"महाशय, आप क्यों हँस रहे हैं ? मैं किसी लालच में नहीं आया हूँ । मैं किसी शुभ संदेश के इंतजार में हूँ । वह किसी से भी मिल सकता है ।"

दुकानदार बोला—"भाई साहब, आप बुरा न मानें । मैं यों ही हँस पड़ा था । बात यह है कि मैंने भी चार-पाँच दिन पहले ऐसा ही सपना देखा था । सपने में एक महात्मा जी कह रहे थे कि यहाँ से दक्षिण दिशा में सौ मील चलने पर एक गाँव है—नारायणपुर । उसमें एक बरगद का पेड़ है । उसी पेड़ के पास एक मकान है । उस मकान में आँगन है । आँगन में खजाना गड़ा है—ढेर सारा सोना और चाँदी ।" एक क्षण रुकने के बाद दुकानदार ने कहा—"अब आप ही बताइए, क्या यह हँसने की बात नहीं है ? क्या मुझे उस खजाने की तलाश में जाना चाहिए ?"
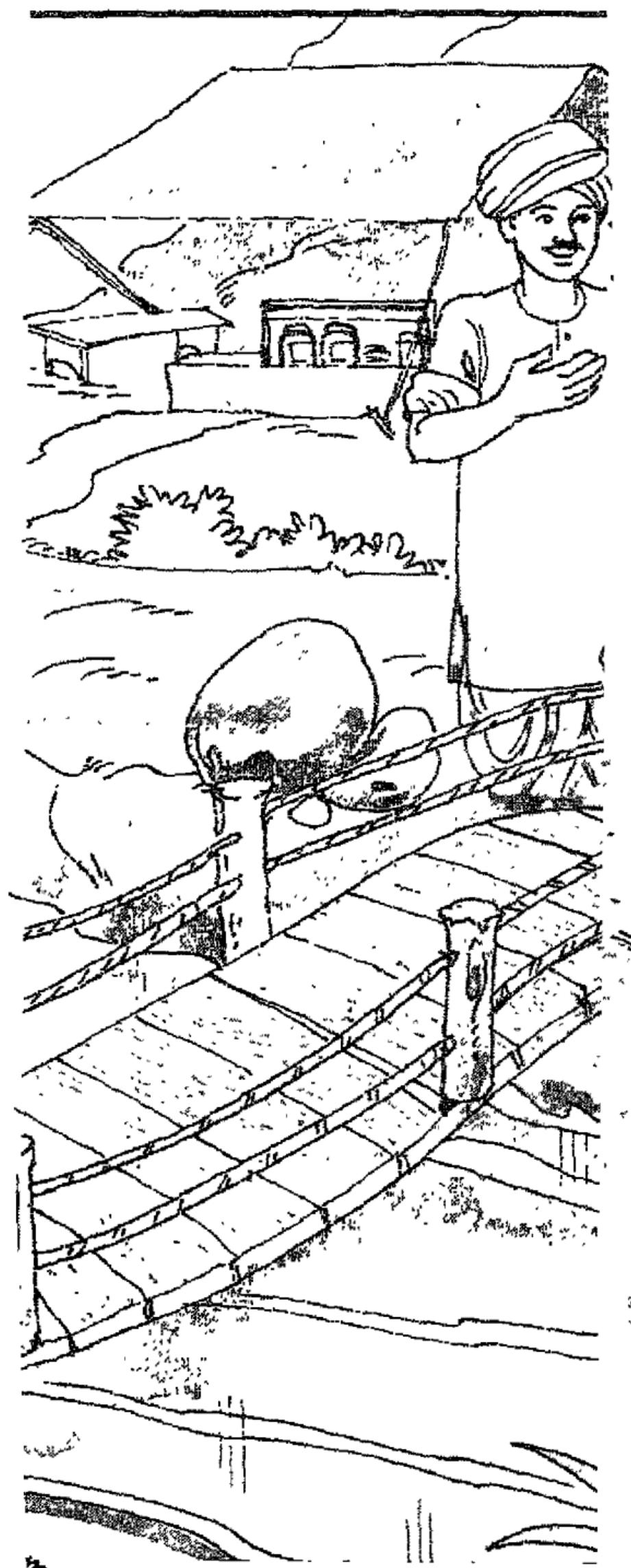
भजनसिंह कुछ देर सोचता रहा । उसे लगा, उसे वही शुभ संदेश सुनने को मिल गया है, जिसके लिए वह आया था । उसने दुकानदार से इतना ही कहा—"अच्छा महाशय, आप सच कहते हैं । सपने तो सपने ही होते हैं । उनसे हमें भटकना नहीं चाहिए । फिर भी वे कभी-कभी सच हो जाते हैं । अच्छा, अब मैं चलता हूँ । अलविदा ।"

यह कहकर भजनसिंह अपने घर के लिए लौट पड़ा । दुकानदार ने जिस मकान का पता दिया था, वह तो उसी का मकान था । वह जल्दी ही घर पहुँचना चाहता था । इस बार वह पैदल नहीं, किसी न किसी सवारी में सफर करता रहा ।

घर पहुँचकर उसने मकान खोला । सुखिया और धरम के लौटने में अभी कुछ दिन बाकी थे । उसने अंदर से मकान बंद कर लिया और आँगन खोदने लगा । उसने पाया, सचमुच एक बड़ा खजाना उसके हाथ लग गया है ।

अब वह काफी धनी बन गया था । उसने अपना मकान बनवा लिया । सुखिया और धरम भी आ गए । अब वे लोग सुख से रहने लगे ।

कीमती सलाह

एक समय चंद्रपुर शहर में राजा चंद्रसेन राज़ करता था । वह विद्वानों, साधु-संतों का बहुत आदर करता था । वह समय-समय पर उन्हें अपने महल में बुलाता और उनके प्रवचन सुना करता था । इसके बाद वह उन्हें धन देकर विदा करता था ।

एक बार राजा का दरबार लगा हुआ था । राज्य के बड़े-बड़े विद्वान् और गुणीजन बैठे हुए थे । वे अनेक मामलों पर अपने विचार रख रहे थे । इतने में एक साधु ने दरबार में प्रवेश किया । राजा उसके स्वागत में खड़ा हो गया । साधु को आसन दिलवाकर राजा बैठा, फिर पूछा—"कहिए मुनिवर, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?"

कुछ देर तक राजा को देखने के बाद साधु बोला—"राजन, मैं तुम्हें एक सलाह देना चाहता हूँ ।"

राजा ने कहा—"कहिए मुनिवर, मैं आपकी सलाह सुनने के लिए उत्सुक हूँ ।"

साधु ने कहा—"मैं वह सलाह दूँगा तो सही, लेकिन उसके बदले आपको सौ स्वर्ण मुद्राएँ देनी होंगी ।"

राजा ने पूछा—"ऐसी क्या सलाह है, जिसके बदले आप सौ स्वर्ण मुद्राएँ माँग रहे हैं ?"

साधु बोला—"राजन, पहले आप अपने आदमी को सौ

स्वर्ण मुद्राएँ देने का आदेश दें, तभी मैं आपको वह नेक सलाह दूँगा ।"

राजा ने महामंत्री को आदेश दिया—"साधु महाराज को तुरंत सौ स्वर्ण मुद्राएँ दी जाएँ ।"

यह सुनकर महामंत्री को मन ही मन बड़ा क्रोध आया । उसने खजांची को स्वर्ण मुद्राएँ देने का आदेश दे दिया ।

राजा ने पूछा—"मुनिवर, अब बताइए, वह नेक सलाह क्या है ?"

साधु बोला—"सोच लो पहले, काम का अंजाम क्या होगा !"

यह सुनकर वहाँ उपस्थित लोग हँसने लगे । महामंत्री तो अंदर ही अंदर जल-भुन गया । सब धीरे-धीरे फुसफुसाने लगे । कहने लगे—"साधु ने पहले सौ मुद्राएँ लेकर अक्लमंदी का काम किया है ।"

तभी राजा जोर से बोला—"खामोश ! साधु जी ने यह सलाह मुझे दी है और मैं इस पर अमल करूँगा । आप लोगों को इस पर हँसने की जरूरत नहीं है ।"

कुछ रुककर राजा ने फिर कहा—"अगर हम कोई काम शुरू करने से पहले उसके परिणाम के बारे में सोच लें तो इसमें हमारी ही भलाई है । हम लोग कभी इस बात पर विचार ही नहीं करते, इसीलिए परिणाम बुरा निकलता है ।"

राजा ने इस बात को हमेशा अपने मन में रखने का फैसला किया । उसने आदेश दिया कि यह बात महल की दीवारों पर स्वर्ण अक्षरों में लिखवा दी जाए । इसके अलावा एक चाँदी की तख्ती पर यही बात खुदवाकर महल के बाहर

टाँग दी जाए ।

महामंत्री राजा से नाखुश रहता था । उसे राजा का यह परोपकारी स्वभाव बिलकुल पसंद नहीं था । वह राजा को सिंहासन से हटाना चाहता था । वह हमेशा राजा को मारने की योजना मन ही मन बनाता रहता और खुद राजा बनने के सपने देखा करता था ।

महामंत्री ने एक षड्यंत्र रचा । उसने राजा के नाई को रिश्वत देकर अपनी तरफ मिला लिया । उसे मंत्री बनाने का वायदा भी किया । नाई उसकी बात मानकर उसके षड्यंत्र में शामिल हो गया ।

एक दिन रोज की तरह नाई राजा की हजामत बनाने आया । हजामत का सारा सामान चाँदी की तश्तरी में लाया गया । जैसे ही नाई ने उस्तरा उठाया, अचानक उसका ध्यान तश्तरी में खुदे वाक्य की तरफ चला गया—'सोच लो पहले, काम का अंजाम क्या होगा !'

उसी समय नाई को अपनी गलती का अहसास हो गया । उसने सोचा, 'अगर महामंत्री राजा बन भी गया तो वह मुझे मंत्री नहीं बनाएगा । वह मुझे मार डालेगा, क्योंकि मैं उसके षड्यंत्र को जानता हूँ ।'

यह सोचकर नाई बुरी तरह काँपने लगा । राजा ने उसकी घबराहट का कारण पूछा । नाई ने सारा षड्यंत्र राजा को बताकर अपना अपराध स्वीकार कर लिया । नाई ने बताया कि जहर से बुझे उस्तरे से उसको मारने की योजना थी ।

राजा ने उसी समय महामंत्री को पकड़ने का आदेश

दिया । उसे पकड़कर कारागार में डाल दिया गया । नाई के सच बोलने से प्रसन्न होकर राजा ने उसे इनाम दिया ।

फिर राजा ने अपना दरबार लगाया । जिन विद्वानों, गुणीजनों ने साधु की सलाह का मजाक उड़ाया था, सभी को उपस्थित होने का आदेश दिया गया । सभा लगने पर षड्यंत्र के बारे में सभी को बताया गया । किस तरह नाई को सद्बुद्धि प्राप्त हुई, यह भी बताया गया ।

सब लोग चुप थे । उनकी नजरें जमीन पर गड़ी हुई थीं । कुछ क्षणों के बाद एक मंत्री ने कहा—"राजन, हमसे गलती हो गई । आज से हम सबके लिए यही राष्ट्रीय नारा होगा—'सोच लो पहले, काम का अंजाम क्या होगा !' "

शरारती

बहुत पुरानी बात है । तीन विदेशी यात्री समुद्र-तट पर नाव से उतरे । वहाँ सिपाही पहरा दे रहे थे । उन्होंने विदेशियों को पकड़ लिया और उन्हें राजा के दरबार में ले गए । राजा ने उनके बारे में पूछताछ की ।

पूछताछ करने पर पता चला कि वे तीनों अपराधी हैं, इसीलिए अपने देश से भाग आए हैं । वे यहाँ शरण लेना चाहते हैं, जिससे अपना नया जीवन शुरू कर सकें । उनमें से एक चोर था, दूसरा जादूगर और तीसरा शरारती था ।

राजा ने चोर को गौर से देखा और कहा—"तुम तो अच्छे आदमी दिखाई देते हो । ऐसा लगता है, तुमने अपनी गरीबी से तंग आकर चोरी की होगी । मैं तुम्हें एक हजार चाँदी के सिक्के देता हूँ । इनसे तुम कोई व्यापार शुरू करो और इस तरह नया जीवन शुरू करो । एक बात का ध्यान रखना, तुम्हें इस देश के कानून को मानना होगा ।"

राजा की आज्ञा के अनुसार चोर को एक हजार चाँदी के सिक्के मिल गए । उसने राजा के सामने झुककर प्रणाम किया, फिर उनकी उदारता की प्रशंसा की और चला गया ।

अब राजा ने जादूगर की ओर देखा और कहा—"तुम भी स्वभाव से अच्छे आदमी दिखते हो । धन की समस्या और ईर्ष्या के कारण तुम जादूगर बन गए होगे और बहुत से

लोगों को बहुत कष्ट दिए होंगे । मैं तुम्हें एक हजार चाँदी के सिक्के देता हूँ । तुम इन्हें मेरी ओर से भेंट समझो । इनसे अपनी पसंद का कोई व्यापार करो और अच्छा जीवन बिताओ । याद रहे, इस देश के कानून को कभी न तोड़ना ।"

तब राजा ने अपने मंत्री को आदेश दिया कि जादूगर को चाँदी के एक हजार सिक्के दे दिए जाएँ । जादूगर ने सिक्के लिए और राजा से वादा किया कि मैं अच्छा आदमी बनूँगा । उसने राजा को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और चला गया ।

अंत में राजा ने शरारती व्यक्ति को बुलाया और उससे कहा—"तुमने बहुत शरारतें की होंगी । लोगों को बहुत तंग किया होगा । यह आदत आदमी में स्वभाव के कारण जन्म से ही होती है । शरारती व्यक्ति को कोई नहीं सुधार सकता । मैं आदेश देता हूँ, तुम्हारा सिर उड़ा दिया जाए ।"

राजा के सिपाही उस शरारती को घसीटकर मृत्युदंड देने की जगह पर ले गए और तलवार से उसका सिर उड़ा दिया ।

अगले दिन बड़े सवेरे राजा का एक नौकर राजा के पास दौड़ता हुआ आया और बोला—"महाराज, शरारती व्यक्ति मरा नहीं है । उसका धड़ वहाँ पड़ा है, परंतु उसका सिर उछलता-कूदता फिर रहा है । आज सुबह मैं जब वहाँ से जा रहा था तो वह सिर मुझसे बोला—'अरे, राजभवन के कर्मचारी, तुम्हारा राजा मूर्ख है ।' इसीलिए मैं यहाँ आपके पास दौड़ता हुआ चला आया हूँ कि इस बात की जानकारी आपको दे दूँ ।"

यह सुनकर राजा अचंभे में पड़ गया और नौकर की इस कहानी पर यकीन नहीं कर सका । वह बहुत देर तक यों ही बैठा रहा । जब उसकी समझ में कुछ नहीं आया, तब उसने अपने मुख्य सेनापति को बुलाया और उससे कहा—"तुम इस नौकर के साथ तुरंत जाओ और देखो, क्या बात है । अगर यह बात सच है तो मुझे खबर दो । मैं खुद जाकर देखूँगा । अगर यह सच नहीं है तो तुम इस नौकर का वहीं सिर उड़ा देना ।"

मुख्य सेनापति राजकर्मचारी के साथ वहाँ पहुँचा । उसने देखा, शरारती व्यक्ति का धड़ और सिर जमीन पर अलग-अलग पड़े हैं । मुख्य सेनापति ने सिर को उठाकर देखा, पर उसमें जीवन का कोई निशान नहीं था । 'अरे, यह तो बिलकुल मुर्दा है !' यह देखकर नौकर घबरा गया । उसने मुख्य सेनापति से विनती की कि मेरे जीवन की रक्षा करे । मुख्य सेनापति राजा की आज्ञा को नहीं टाल सकता था, इसलिए उसने तलवार खींच ली और नौकर का सिर उड़ा दिया ।

फिर वह राजमहल की ओर जाने के लिए मुड़ा । वह राजा को जल्दी से जल्दी रिपोर्ट देना चाहता था । अभी वह दो-चार कदम ही चला था कि शरारती का सिर उछला और जोर से हँसने लगा । उसने मजाकिया ढंग से कहा—"अरे, मुख्य सेनापति, क्या तुमने राजा की मूर्खता का काम देख लिया है ? तुम्हारे मूर्ख राजा ने बिना सोचे-समझे एक निरपराध नौकर का कत्ल करने की आज्ञा दे दी । क्या तुम्हारा राजा मेरी शरारत को रोक सकता है ? न तो तुम्हारे
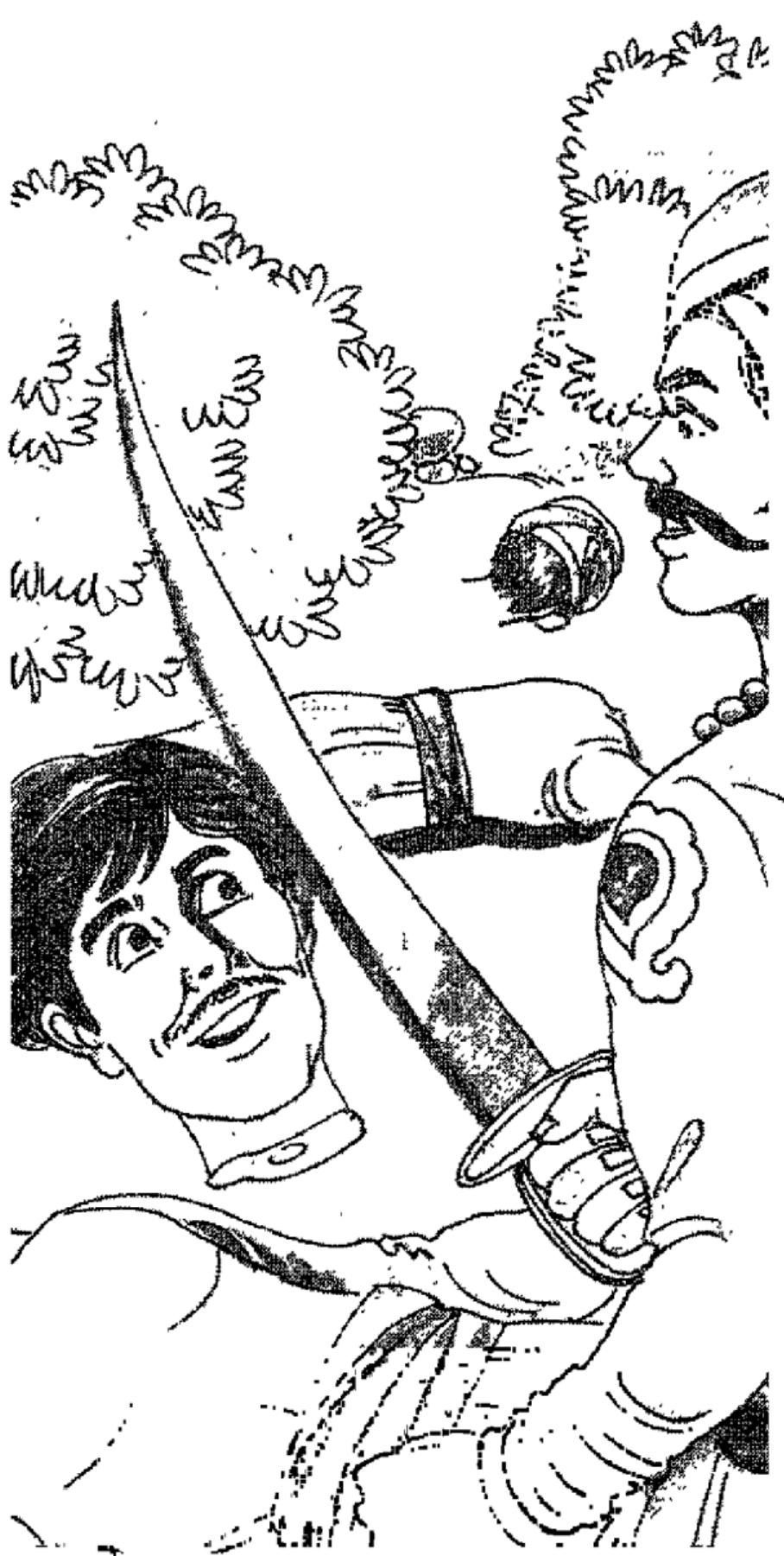
राजा को कुछ समझ है और न तुमको ही । हा⋯हा⋯हा, ही⋯ही⋯ही !" सिर व्यंग्यपूर्ण हँसी हँसता रहा ।

मुख्य सेनापति राजभवन तक दौड़ा आया । उसने राजा को सारा किस्सा कह सुनाया । राजा तुरंत दौड़कर वहाँ पहुँचा । राजा को देखकर शरारती बोला—"अरे, मूर्ख राजा, तुम मेरी शरारतों को नहीं रोक सकते ।" यह कहकर उसने हँसना शुरू कर दिया ।

राजा बड़ा शर्मिंदा हुआ । अब वह गुस्से से भर गया । उसने अपने नौकरों को बुलाया । उन्हें आज्ञा दी कि एक गहरा गड्ढा खोदो और उसमें इस सिर को दबा दो । राजा की आज्ञा के अनुसार शरारती का सिर गहरे गड्ढे में दबा दिया गया ।

सात दिन बीत गए । जिस जगह शरारती का सिर दबाया गया था, वहाँ एक छोटा-सा पौधा उग आया । कुछ साल बीत गए और उस पर फल लगने लगे । उस पेड के फल शरारती व्यक्ति के सिर जैसे ही लगते थे । वह नारियल का पेड़ था, जो अपनी किस्म का पहला पेड़ था ।

सुख की खोज

किसी जमाने में एक ऋषि हिमालय में नदी-किनारे साधना कर रहे थे । वह रात को कुटी में रहते और दिन-भर नदी-किनारे साधना करते । ऋषि अकेले ही थे । चारों ओर घने पेड़ और झाड़ियाँ थीं । उस कुटी में एक चूहा रहता था । वह कभी ऋषि की टाँग पर से दौड़ जाता और कभी उनकी गोद में कूद जाता । ऋषि भी चूहे की इन क्रियाओं में आनंद लेते थे ।

एक दिन ऋषि ने चाहा कि कोई ऐसा हो, जिसके साथ बातचीत की जा सके । इसलिए ऋषि ने चूहे को वाणी का वरदान दे दिया । अब वह कभी-कभी चूहे से बात कर लिया करते थे । एक रात चूहा ऋषि के पास आकर बोला—"आदरणीय ऋषि, आपने मुझे वाणी दी है । आप बड़े दयालु हैं । मैं आपसे एक और वरदान चाहता हूँ । क्या आप देंगे ?"

ऋषि ने मुस्कराते हुए पूछा—"बोलो, क्या चाहिए ?"

चूहे ने कहा—"पवित्र ऋषि महोदय, मैं इस कुटी के बाहर नहीं जा सकता । जब कभी जाता हूँ तो बिल्ली मेरा पीछा करती है । आपसे निवेदन है कि मुझे बिल्ली बना दें ।" इस पर ऋषि हँस पड़े । उन्होंने चूहे पर कमंडल से पवित्र जल छिड़का तो चूहा बिल्ली बन गया ।

कुछ दिनों बाद एक रात ऋषि ने बिल्ली से पूछा "क्या

तुम खुश हो ?"

बिल्ली ने दुखी स्वर में कहा—"आदरणीय ऋषि, मुझे अब बिल्लियों की चिंता नहीं है । अब दूसरी चिंता सता रही है । जब मैं नदी की ओर जाती हूँ तो कुत्ते मेरे पीछे लग जाते हैं । उनसे बचने के लिए मैं आपकी कुटी तक भाग आती हूँ और किसी तरह अपना बचाव करती हूँ । पवित्र ऋषि, कृपा करके मुझे कुत्ता बना दीजिए ।"

ऋषि हँस पड़े । उन्होंने बिल्ली पर पवित्र जल छिड़का तो बिल्ली कुत्ते में बदल गई ।

कुछ दिन बीते । एक दिन ऋषि ने कुत्ते से पूछा—"अब तो तुम खुश हो ?"

कुत्ते ने बड़ी निराशा के साथ कहा—"हे ऋषि महोदय, यह भी क्या जिंदगी है ! अब तो रोजाना पेट भरने की समस्या खड़ी हो गई है । मुझे भोजन की तलाश में दूर-दूर तक जाना पड़ता है । मैंने बंदरों को देखा है, वे एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उछलते-कूदते फिरते हैं और हर तरह के फल खाते हैं । बड़े मजे से रहते हैं । अगर आप मुझे बंदर बना दें तो आपकी बड़ी कृपा होगी ।"

ऋषि के चेहरे पर रहस्यमयी मुस्कान दौड़ गई । उन्होंने एक बार फिर पवित्र जल कुत्ते पर छिड़का तो कुत्ता बंदर में बदल गया ।

कुछ दिन और बीते । बंदर खुशी से एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उछलता-कूदता फिरता । तरह-तरह के फल खाता । कुछ दिन बाद गर्मी शुरू हो गई । बंदर के लिए मुश्किल खडी हो गई पेडो पर फल खत्म हो गए अब सूखे फल

भी खाने के लिए नहीं मिलते थे । पेड़ों के आसपास पानी नहीं था ।

बंदर की परेशानी रोज-रोज बढ़ती जाती थी । कुछ दिन भूखा रहने के बाद बंदर ऋषि के पास पहुँचा और बोला—"पवित्र ऋषि महोदय, मेरी हालत इतनी खराब हो गई है कि अब और नहीं सहा जाता । अगर आप मुझे सूअर बना दें तो कृपा होगी ।"

ऋषि को बंदर की हालत पर तरस आ गया । उन्होंने बंदर पर कमंडल में से पवित्र जल छिड़का । फिर क्या था, बंदर सूअर बन गया । दिन बीतने लगे । ग्रीष्म ऋतु की गर्मी से बचने के लिए सूअर तालाब के पानी में मजे से पड़ा रहता था । वह ठंडे-ठंडे पानी की तरावट का आनंद उठाता था । एक दिन एक घटना घटी । राजा जंगल में शिकार खेलने के लिए आया । तालाब में एक मोटे सूअर को पड़े देखा तो उसने अपने धनुष पर बाण चढ़ाया और सूअर को निशाना बनाया । उसका निशाना थोड़ा-सा चूक गया ।

अब सूअर भाग निकला । राजा ने उसके पीछे शिकारी कुत्ते लगा दिए । सूअर ने इस बीच चालाकी से काम लिया । चारों ओर घना जंगल था ही, वह किसी तरह कुत्तों से बचकर एक झाड़ी में छिप गया ।

उसने झाड़ी में से झाँककर देखा । एक हाथी मस्त चाल से चला जा रहा था । उसकी पीठ पर राजा सवार था । बस, सूअर को लालच ने आ घेरा ।

उसी रात सूअर ऋषि के पास गया और बताया कि उसकी जान को खतरा है । उसने प्रार्थना की कि उसे हाथी

बना दिया जाए । ऋषि हँस पड़े । फिर उन्होंने कमंडल में से पवित्र जल सूअर पर छिड़का । सूअर हाथी बन गया ।

कुछ दिनों बाद उस जंगल में हाथियों के शिकारी आए । उन्होंने हाथी को जाल में फँसाया और उसे राजा के पास ले गए । राजा के महावतों ने हाथी को प्रशिक्षण दिया । कुछ दिन बीते ।

एक दिन राजा और रानी नए हाथी पर चढ़ना चाहते थे । इसलिए महावतों ने हाथी को सजाया और उसे राजमहल के फाटक पर ले गए । हाथी बहुत खुश हुआ । उसे गर्व हो रहा था । वह सोच रहा था कि उससे बड़ा और शानदार पशु कोई नहीं है ।

राजा-रानी हाथी के पास आए और उस पर चढ़ने लगे । सहसा हाथी को गुस्सा आ गया । उसे यह महसूस हुआ कि एक स्त्री को अपने ऊपर ले जाना सरासर अपमान की बात है । वह बुरी तरह इधर-उधर हिलने लगा तो राजा-रानी जमीन पर गिर पड़े ।

राजा जल्दी से उठा, उसने रानी को उठाया और मधुर शब्दों में दिलासा दिया ।

यह देखकर हाथी को जलन हुई । उसी समय महावत दौड़ता हुआ आया । वह हाथी को दंड देना चाहता था । इसीलिए उसे बाँधने के लिए भारी जंजीर लाया था ।

हाथी भाग निकला । वह बड़ी जोर से भागा और महावत और रक्षकों की नजर से ओझल हो गया । वह भागकर ऋषि की कुटी में जा पहुँचा । उसने ऋषि से कहा—"आदरणीय, मैं चाहता हूँ कि आप मुझे रानी बना दें

ऋषि कुछ समय के लिए गहरे विचारों मे डूब गए । उन्होंने कहा—"हे चूहे, मैं तुम्हें रानी नहीं बना सकता । ऐसा करने में बड़ी कठिनाइयाँ हैं । अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हे सुंदर लड़की बना सकता हूँ । उसके बाद तुम चतुराई से काम लेकर खुद ही रानी बन जाना ।"

हाथी तैयार हो गया । तब ऋषि ने अपने कमंडल से थोड़ा-सा पवित्र जल लिया और उस पर छिड़क दिया । हाथी फौरन एक सुंदर लड़की बन गया ।

वह लड़की ऋषि के पास रहने लगी । अब वह ऋषि की दिनचर्या में मदद करती थी । एक दिन दोपहर के समय ऋषि नदी-किनारे ध्यान लगाए बैठे थे । एक राजा शिकार खेलता हुआ उस जंगल में आ निकला । वह बहुत थक गया था और आराम करना चाहता था ।

राजा ने कुछ दूर पर एक कुटी देखी और वहाँ पहुँच गया । यह एक ऋषि की कुटी थी । लड़की ने राजा को अंदर आने का निमत्रण दिया और उसे पानी पिलाया । साथ में फल भी खिलाए । राजा ने उस सुंदर लड़की को देखा तो मन ही मन उससे प्रेम करने लगा ।

राजा ने उसकी उदारता और सद्व्यवहार की प्रशंसा की और पूछा—"हे वनकन्या, क्या तुम ऋषि की पुत्री हो ?"

लड़की ने जवाब दिया—"हे राजा, मैं ऋषि की असली बेटी नहीं हूँ । ऋषि ने मेरा पालन-पोषण किया है । उन्होंने मुझे बताया है कि मैं राजकन्या हूँ । उन्होंने मुझे यह भी बताया है कि मेरे पिता एक युद्ध में मारे गए थे और मेरी माता जी उसके बाद जल्दी ही मर गई थीं । अब यह ऋषि

ही मेरे संरक्षक हैं ।"

राजा ने लड़की से कहा—"हे सुंदरी, मैंने तुमसे शादी करने का निश्चय किया है । मैं तुम्हें रानी बनाऊँगा । क्या तुम्हें स्वीकार है ?"

लड़की तो इसी मौके की तलाश में थी । उसने राजा के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया । इसलिए राजा ऋषि से आज्ञा लेकर उसे अपने साथ महल में ले गया ।

वह राजा पहले से ही शादीशुदा था । उसकी एक रानी थी । राजा ने पहली रानी को गद्दी से हटा दिया और वनकन्या को रानी बना दिया ।

एक हफ्ता बीत गया । चूहे के लिए जो जीवन-अवधि मिली थी, वह खत्म हो गई । नई रानी तालाब में स्नान करते समय मर गई । राजा का दिल टूट गया । ऋषि को खुद ही पता लग गया कि रानी के रूप में चूहा मर गया है । वह राजा के पास आया । उसने राजा की नई रानी की मृत्यु पर शोक व्यक्त किया ।

ऋषि ने राजा से कहा कि उसके मृत शरीर को महल के बाग में गाड़ दिया जाए । जब रानी के शव को जमीन में गाड़ दिया गया तो उस पर ऋषि ने अपने कमंडल से पवित्र जल छिड़का और वन की ओर चले गए ।

देवता और दानशील व्यक्ति

एक संन्यासी ने बहुत वर्ष चिंतन और एकांत में बिताए । एक बार एक दिव्य आत्मा उसके पास आई । संन्यासी समझने लगा कि यह उसकी तपस्या का ही फल है । अब उसे विश्वास हो गया कि वह पवित्रता के सही मार्ग पर चल रहा है ।

देवता ने कहा—"हे संन्यासी, तुम एक परोपकारी व्यक्ति के पास जाओ और उससे कहो कि सर्वोच्च शक्ति द्वारा उसे आदेश दिया जाता है कि अच्छे काम करने के परिणामस्वरूप वह छह महीने के अंदर मर जाएगा । मरकर वह सीधा स्वर्ग में जाएगा ।"

आनंदित संन्यासी तुरंत उस परोपकारी के पास चल दिया । जब उस परोपकारी ने यह सब सुना तो वह और अधिक परोपकार करने लगा । उसने सोचा, उसे स्वर्ग तो जाना ही है, इतने दिन और अधिक लोगों की सहायता कर दे ।

इस बात को बीते तीन साल हो गए, लेकिन वह परोपकारी व्यक्ति नहीं मरा । उसने अपना काम जारी रखा । अब वह बहुत बड़ा समाज-सेवी बन चुका था ।

इधर वह संन्यासी अपनी भविष्यवाणी को गलत होते देख कुंठित होने लगा । वह अपने मतिभ्रम पर क्रोधित था । जब गली के लोग उसकी ओर इशारा करके उसे झूठा

भविष्यवेत्ता बताते तो वह अंदर ही अंदर जलने लगता । वह खुद से और पूरी दुनिया से क्रुद्ध रहने लगा । तब सभी ने उसके पास आना छोड़ दिया । अब वह अकेला रहता था ।

तभी देवता दुबारा प्रकट हुआ । बोला—"तुमने देखा, कितने कमजोर और निष्क्रिय आदमी हो तुम ? यह सच है कि वह परोपकारी व्यक्ति स्वर्ग जा चुका है । वह एक प्रकार से मर ही चुका है, फिर भी वह इस जीवन का आनंद ले रहा है । लेकिन तुम अभी तक बेकार के आदमी हो । अब तुम उससे जलन महसूस करते हो, जो तुम्हारे व्यर्थ के अभिमान के परिणामस्वरूप पैदा हुई है । तुम्हें मुक्ति का मार्ग खोजने के लिए और प्रयत्न करना होगा । तुम दुखी और दीन जनों की सेवा करो, तभी तुम्हारे जीवन को भक्ति की राह मिलेगी । इसलिए तुम अध्यात्म के मार्ग पर नए सिरे से चलना प्रारंभ करो ।"

अहमद हुसैन और शाह

गजनी के राजा मुहम्मद एक दिन टहल रहे थे । उनके साथ बुद्धिमान अहमद हुसैन भी थे । अहमद के बारे में यह प्रसिद्ध था कि वे किसी मनुष्य के दिमाग मे क्या है, यह देख सकते हैं । राजा ने उनकी इस शक्ति का प्रदर्शन अहमद से चाहा ।

अहमद ने अपने पास इस तरह की किसी भी शक्ति के होने से इंकार कर दिया ।

मुहम्मद ने उनकी इस विशेष योग्यता को देखने के लिए तरकीब लड़ाई ।

एक दिन राजा ने अहमद को पुकारा—"अहमद !"

"हाँ जी ।" अहमद बोल पड़ा ।

राजा ने दूर दिखाई पड़ रहे एक आदमी की ओर इशारा करते हुए कहा—"तुम्हारी समझ में वह आदमी कौन है ?"

"बढ़ई ।"

"उसका नाम क्या है ?"

"मेरी तरह, अहमद ।"

"मैं हैरान हूँ, उसने अभी-अभी कुछ खाया है ।"

"हाँ, कुछ मीठा ।"

राजा ने उस आदमी को बुलाया । पूछने पर पाया, सभी बातें सही थीं ।

राजा ने अहमद से कहा—"तुमने अपनी योग्यता को प्रदर्शित करने से मना कर दिया था साथ ही बडी चतुराई से अपनी

आध्यात्मिक शक्ति को छिपाए रखा । पर क्या तुम्हें यह मालूम है कि मैंने जबरदस्ती तुम्हारी योग्यता का प्रदर्शन देख लिया है ? यदि मैं तुम्हारी योग्यता की कहानी सभी लोगों में दुहरा दूँ तो वे तुम्हें संत मान लेंगे । अगर तुम साधारण आदमी बने रहोगे तो तुम अपने सूफी वाले वेश को किस प्रकार बनाए रखोगे ?"

अहमद बोले—"मैं यह मानता हूँ कि मैं आदमी के दिमाग को पढ़ सकता हूँ, लेकिन जब मैं यह करता हूँ तब आदमी बिलकुल नहीं जान पाता है । यह मेरा स्वभाव है । मैं तुच्छ उद्देश्यों के लिए यह सब नहीं करता । इससे मेरे रहस्य अक्षत रहते हैं ।"

राजा ने पूछा—"क्या तुम यह मानते हो कि अभी-अभी तुमने अपनी वही शक्ति प्रयोग की थी ?"

"नहीं, बिलकुल नहीं ।" अहमद ने इंकार कर दिया ।

"फिर तुमने मेरे सवालों के जवाब किस तरह सही-सही दिए ?"

"यह तो बहुत आसान है । जब आपने मुझे मेरे नाम से पुकारा तब उसका सिर भी घूम गया था । तब मुझे लगा कि उसका भी यही नाम है । तभी मैंने अंदाजा लगाया कि वह व्यक्ति जंगल में है और उन पेड़ों को देख रहा है जो बढ़ई के काम आ सकें, तो बढ़ई ही होगा । तभी उसने कोई मिठाई खाई थी, क्योंकि वह अपने मुँह के इर्द-गिर्द मँडराती मक्खियों को भगा रहा था ।"

राजा भी अहमद की बुद्धिमत्ता का लोहा मान गए । वास्तव में अहमद की पारखी नजर और हाजिर-जवाबी का पूरे देश मे कोई सानी नहीं था

सपना

जयगढ़ नाम के शहर में एक बुढ़िया और उसका पोता किशन रहते थे । उन लोगों के पास थोड़ी-सी जमीन थी । उस पर खेती करके जो कुछ मिल जाता, उससे दोनों अपना पेट पालते थे ।

एक दिन बुढ़िया ने किशन से कहा—"बेटा, मुझसे अब घर का काम-काज नहीं हो पाता, सो तू इस घर में एक बहू ले आ । तेरी उम्र भी अब विवाह योग्य हो गई है ।"

किशन चुपचाप सुनता रहा । कुछ देर बाद बोला—"दादी, कह तो तू ठीक रही है, पर असली बात कुछ और है । इतनी कम आमदनी से हम दोनों का गुजारा मुश्किल से चल पाता है । फिर एक और प्राणी का बोझ कैसे उठाया जा सकता है ? हमारी तो जैसे-तैसे कट ही रही है । दूसरे की लडकी को यहाँ लाकर क्यों उसका जीवन बरबाद किया जाए ?"

दादी बोली—"हर आदमी अपनी किस्मत का खाता है । भगवान् उसके लिए भी देगा ।"

किशन बोला—"भगवान् कहाँ से देगा ? यह सब भाग्य का ही तो फेर है । हमारा भाग्य ही खोटा है ।"

यह कहता हुआ किशन उदास हो गया । वह गहरी सोच में पड गया । सोचते-सोचते उसकी ऑख लग गई सोते हुए उसने एक सपना देखा उसे एक आवाज सुनाइ

दी—'बेटा, तू चिंता मत कर, मेरे बताए हुए मार्ग पर जा । वहाँ भाग्य तेरा इंतजार कर रहा है ।'

कुछ रुककर फिर वही आवाज आई—'किशन, तुम यहाँ से सीधी सड़क पर चलते चले जाना । काफी दूर जाकर एक नदी मिलेगी । नदी पार करके तुम एक घने जंगल मे पहुँच जाओगे । इस जंगल मे जंगली जानवर शेर, चीता आदि रहते है । इनके अलावा वहाँ खतरनाक डाकुओं का वास भी है । परंतु तू घबराना मत । भाग्य तेरे साथ है । जगल में तू चलते जाना । काफी आगे चलकर झाड़ियों का एक झुरमुट आएगा । उस झुरमुट के अंदर एक छोटा-सा तालाब है । उस तालाब के दाईं ओर टूटी-फूटी सीढ़ियाँ है । उन सीढ़ियों से नीचे उतरकर तू थोड़ी-सी मिट्टी खोदना । वहाँ सोने-चाँदी से भरा एक कलश दबा हुआ है । तू उसे निकाल लेना । वह धन तेरा है ।'

किशन ने उठकर यह बात अपनी दादी को बताई । सुबह होते ही दादी का आशीर्वाद लेकर वह धन की खोज मे निकल पड़ा । चलते-चलते दोपहर हो गई, लेकिन नदी कहीं दिखाई नहीं दी । वह थक चुका था और प्यास के मारे गला सूख रहा था । अचानक कुछ ही दूरी पर उसे नदी दिखाई पड़ी । सबसे पहले उसने ठंडा पानी पिया, फिर नदी के किनारे पेड़ के नीचे उसने दादी का दिया हुआ खाना खाया और कुछ देर आराम किया । उसकी आँख लग गई । उठने पर देखा, शाम हो चली है । वह जल्दी से उठा और तैरकर नदी पार कर ली । जब उसने जंगल में प्रवेश किया तो शाम ढल चुकी थी

किशन अब जंगल में चलने लगा । जैसे-जैसे वह आगे बढ रहा था, जंगल और घना होता जा रहा था । उसे कभी-कभी शेर-चीते की गर्जन सुनाई देने लगी । उसने हिम्मत नहीं हारी ।

रात हो चुकी थी । अँधेरे में हाथ को हाथ दिखाई नहीं दे रहा था । ऐसे में धन की खोज करना उसे बेकार लग रहा था । उसने सोचा, रात-भर यहीं कहीं आराम कर लूँ, फिर सुबह से खोज शुरू करूँगा । अभी किशन यह सोच ही रहा था कि सामने कुछ दूरी पर उसे रोशनी टिमटिमाती दिखाई पड़ी । वह उसी ओर बढ़ चला ।

उसने देखा, वहाँ एक झोंपड़ी थी । दरवाजा खटखटाने पर एक आदमी बाहर आया । किशन ने उस आदमी से कहा—"बाबा, रात-भर गुजारने के लिए स्थान मिलेगा क्या ?"

उस आदमी ने उसे अंदर बुला लिया । जलपान कराने के बाद उसने पूछा—"कहो बेटा, इतने घने जंगल में इतनी रात गए तुम क्या कर रहे हो ?"

किशन ने अपने सपने की सारी कहानी कह सुनाई । उसने बताया कि वह उसी धन की खोज में आया हुआ है ।

वह आदमी बोला—"अब तुम सो जाओ । सुबह-सवेरे ही मैं तुम्हें जगा दूँगा और फिर हम दोनों मिलकर उस खजाने को खोजेंगे ।" इसके बाद आदमी द्वारा बताई गई जगह पर किशन सो गया ।

किशन थका हुआ तो था ही । उसे गहरी नींद आ

झुरमुट और तालाब उसकी झोंपड़ी के पीछे ही है ।

वह यह सोचकर बहुत हैरान हुआ कि मैं इतना बड़ डाकू हूँ और मेरे ही घर के पीछे इतना खजाना छिपा हुआ है, पर मैं इससे अब तक अनजान हूँ । इससे पहले कि यह लड़का जागे, मुझे वह धन निकाल लेना चाहिए ।

लालटेन और कुल्हाड़ी लेकर बाबा झोंपड़ी के पीछे चल दिया । एक जगह लालटेन रखकर वह कुल्हाड़ी से झाड़ियों को काटने लगा । झाड़ियाँ बहुत घनी थीं । उन्हें काटने में पसीना आ गया । कई घंटों की कड़ी मेहनत के बाद वह झाड़ियों को काटने में सफल हो सका । तब तक सुबह हो गई ।

वह झाड़ियों से निकलकर तालाब के किनारे पहुँचा । फिर उसने सीढ़ियाँ उतरकर दाईं तरफ खोदना शुरू किया । काफी देर खोदने के बाद अचानक 'टन' की आवाज हुई । उसने झाँककर देखा तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा । वहाँ एक कलश दबा हुआ था । उसने जल्दी से मिट्टी खोदकर कलश बाहर निकाला । अब वह जोर-जोर से हँसने लगा । बोला—"मैं अभी जाकर उस लड़के का काम तमाम करता हूँ । यह धन मेरा है ।"

कलश उठाने के लिए बाबा ने अपना हाथ बढ़ाया । तभी उसने देखा, सामने एक काला नाग फन फैलाए खड़ा है । वह अपना हाथ पीछे कर भी न पाया था कि नाग ने उसे डस लिया । वह भय एवं दर्द से चीख उठा ।

बाबा की चीख सुनकर किशन की आँख खुल गई । वह तुरंत बाहर आया । आवाज का पीछा करते हुए वह तालाब

के किनारे पहुँचा । उसने देखा, बाबा मरा पड़ा है और उसके सामने चाँदी का भरा कलश पड़ा हुआ है। बाबा का सारा शरीर नीला पड़ चुका था । किशन ने तुरंत सारी बात समझ ली ।

कुछ देर बाद उसने वह कलश उठाया और भगवान् का धन्यवाद करके घर की तरफ चल दिया । घर पहुँचकर किशन ने उस धन से जमीन खरीद ली और खेती करने लगा । फिर उसने एक सुशील कन्या से शादी कर ली । अब तीनों खुशी से रहने लगे ।

सोने के संदूक

एक अमीर व्यापारी ने लंबी यात्रा पर जाते हुए अपना सारा धन अपने नौकर को देखभाल करने के लिए सौंप दिया। व्यापारी यात्रा पर जाते हुए नौकर को समझा रहा था कि कौन-कौन सामान कहाँ-कहाँ रखा है तथा किस प्रकार उसकी देखभाल एवं सार-सँभाल रखनी है। एक जगह रखे हुए संदूकों को दिखाते हुए उसने कहा—"ये सौ संदूक हैं। इनमें से प्रत्येक में सौ-सौ सोने के टुकड़े रखे हुए हैं। इनका विशेष ध्यान रखना।"

जिस समय व्यापारी अपने नौकर को यह सब समझा रहा था, उस समय एक चालबाज और बेईमान आदमी उनकी सब बातें सुन रहा था। उसने मालिक एवं नौकर के बीच हुई बातों को ध्यान से सुन लिया था। जब व्यापारी चला गया तो उस ठग ने व्यापारी के नौकर से अपनी जान-पहचान बढ़ा ली। वे दोनों काफी गहरे मित्र बन गए। अब वे अकसर साथ-साथ बैठकर चाय पिया करते थे।

एक दिन ठग ने नौकर से कहा—"मैं कीमियागर भी हूँ। अगर मेरे पास एक सोने का टुकड़ा हो तो मैं उसे दो मे बदल सकता हू ।" फिर उसने नौकर से पूछा "यदि तुम्हारे

पहले तो नौकर ने उसकी बात का विश्वास ही नही किया, किंतु कुछ दिन पश्चात् ठग के दुबारा कहने पर उसके मन में लालच आ गया । उसने सोचा—क्यों न इसे आजमा लिया जाए और मालिक के पैसे को इस परीक्षा मे लगाया जाए । किंतु वह उस पैसे को काम में लाने से डर भी रहा था ।

ठग ने उसे विश्वास दिलाते हुए कहा कि तुम मालिक के पैसे में से कुछ पैसा बतौर उधार ले लो । यह पैसा तुम रखना भी अपने पास । अगर यह पैसा बढ़ा नहीं तब भी तुम्हारा क्या जाएगा ?

आखिरकार नौकर मान ही गया । उसने एक सोने का टुकड़ा अपने मालिक के खजाने में से निकाल लिया ।

नौकर ने निकाले गए सिक्के को बड़ी चतुराई से ठग द्वारा दी गई पेटी में डाल दिया । ढक्कन खोलने पर दो टुकड़े ही पाए गए । यह देखकर नौकर बहुत खुश हुआ । ठग ने दूसरा टुकड़ा उसे बतौर उपहार दे दिया और बोला—"अगर तुम और सोने के टुकडे लाओ तो मैं और कीमियागिरी दिखाऊँगा । तुम हर बक्से से सिर्फ एक ही सिक्का निकालो । उन्हें यहाँ लाओ । तुम देखोगे, उनसे कितने ही सिक्के बन जाएँगे ।"

जो कुछ ठग ने कहा, नौकर वही करता गया । देखते-देखते सौ सिक्के दुगुने हो गए । ठग ने नौकर को समझाया कि दुगुने हुए सिक्के तुम एक ही बक्से में मत डालना । दूसरे बक्से में वे दो सौ सिक्के डालना । इसके बाद इसमे से सौ रुपए तुम अपने ऊपर खर्च कर लेना ' इस तरह
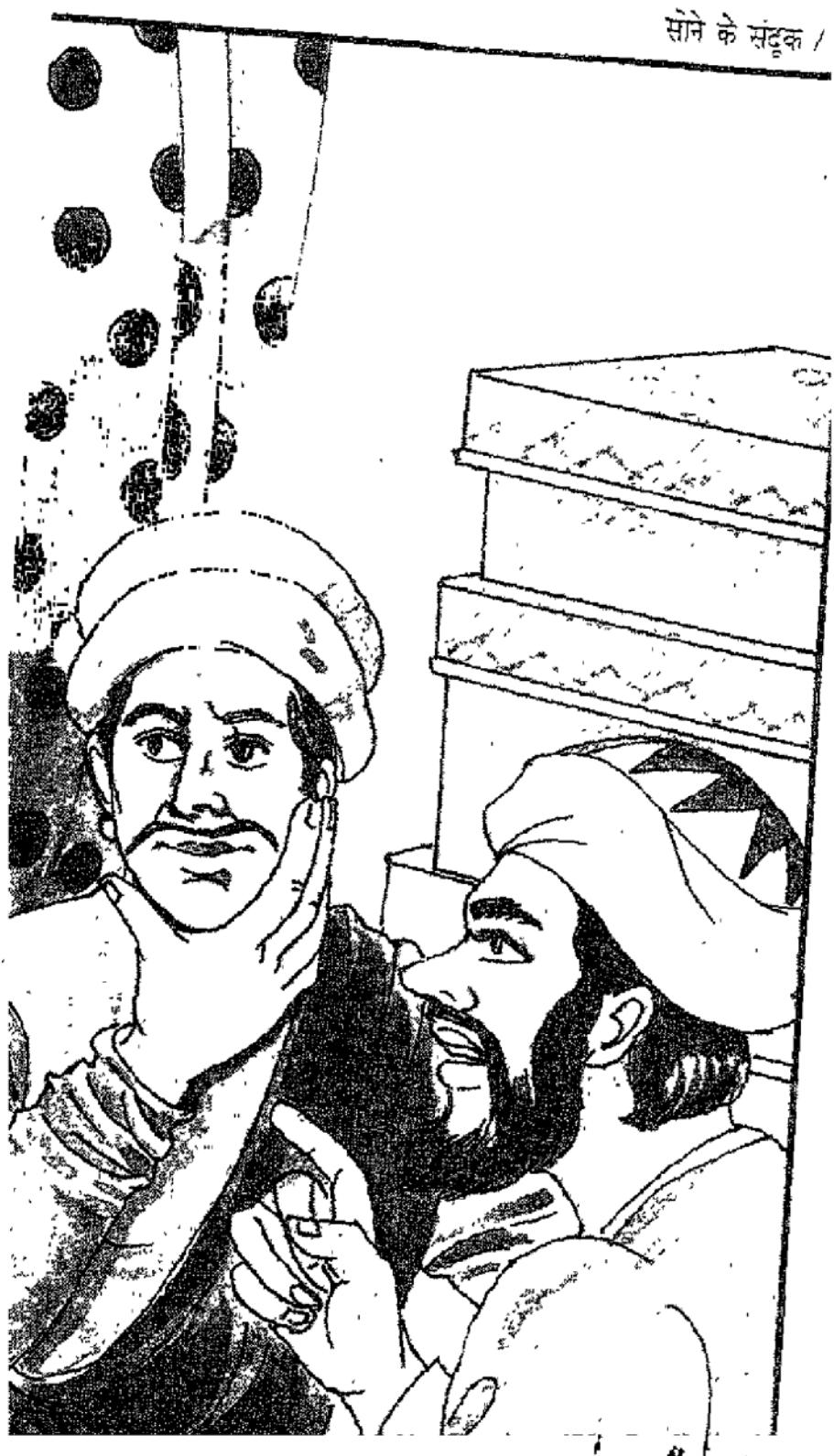
जज ने पूछा—"यह धन कितना था ?"

धूर्त बोला—"नौ हजार आठ सौ पचास रुपए । सौ संदूक हैं । इनमें से निन्यानवे में निन्यानवे–निन्यानवे सोने के टुकड़े हैं तथा एक में उन्चास सोने के टुकड़े हैं ।"

व्यापारी बोला—"यह व्यक्ति झूठ बोल रहा है । मैं इसे सिद्ध कर सकता हूँ । मेरे पास सौ संदूक थे, जिनमें सौ-सौ टुकड़े रखे हुए थे । मैं यह सारा धन अपने नौकर को सौपकर गया था । उन सब संदूकों में कुल मिलाकर दस हजार सोने के टुकड़े थे । हाँ, कुछ कम भी हो सकते है अगर नौकर ने मेरे साथ धोखाधड़ी की होगी तो । यह आदमी कम धन बता रहा है ।"

कोर्ट में सोने की जाँच की गई । वह उतना ही पाया गया, जितना ठग ने बताया था । अब कोर्ट में व्यापारी के नौकर को बुलाया गया । नशे में धुत्त वह व्यक्ति कुछ भी सही-सही नहीं बोल पा रहा था, इसलिए उसे पुलिस के हवाले कर दिया गया ।

अगले दिन नौकर से फिर पूछताछ की गई । पहले तो उसने उलटा-सीधा बयान दिया, किंतु जब पुलिस ने उसकी पिटाई की तो उसने सब कुछ साफ-साफ बता दिया । इस पर कोर्ट ने ठग एवं नौकर को आजीवन जेल में डालने का आदेश दे दिया तथा सारा धन व्यापारी को दे दिया । अब व्यापारी सारा पैसा बैंक में जमा करके सुख से रहने लगा ।

○○○